Artistic Narration Vol. XII No. 2 July-Dec. 2021 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247 Impact Factor 8.298 (SJIF)

मानव–सभ्यता के विकास के अध्ययन में चित्रकला की भूमिका

डॉ० दीप्ति सक्सेना
चित्रकला विभाग
डी०ए०वी० कॉलेज, कानपुर
ईमेलः arvindeepti@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० दीप्ति सक्सेना

मानव–सभ्यता के विकास के अध्ययन में चित्रकला की भूमिका

Artistic Narration 2021, Vol. XII, No. 2, Article No. 31 pp. 201-211

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xii-no-2-july-dec.-2021/

सारांश

प्रत्येक मानव–मन की प्रबल जिज्ञासा अपने उत्थान की पृष्ठभूमि को जानने की होती है। इस जिज्ञासा की शान्ति के लिए सभ्यता के आदिकाल से अब तक निरन्तर चित्रों के माध्यम से मनुष्य ने अपनी भावनाओं को संजोया है। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं का अभाव होने के बावजूद अत्यधिक कठिन जीवन से जूझते हुए उसने वर्षों व्यतीत किए। संघर्षों से प्रेरित होकर ही आदि मानव पाषाण काल से वर्तमान समय तक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी बुद्धि–बल, कल्पनाशीलता एवं रचनाशक्ति से निरन्तर नित नए आविष्कार करता चला आया है। और उन्हे चित्रों के माध्यम से रेखांकित कर संरक्षित करता रहा। भावी पीढियों में अपनी पहचान बनाए रखने के उद्देश्य से ऐसा करने को वह प्रेरित हुआ। किन्तु उससे भी महत्वपूर्ण, कला को जीवन का साक्षी बनाने का विचार, आधुनिक समाज को उसी पाषाण कला की देन है। तब से विकास का पहिया सतत् गतिमान है। और विभिन्न युगों के विकास के उतार–चढाव की झांकी चित्रकला के रुप में सुरक्षित है।

मुख्य शब्द

मानव–सभ्यता, जिज्ञासा, कल्पनाशीलता, रचना–शक्ति, चित्रकला।

डॉ० दीप्ति सक्सेना

प्रस्तावना

एकाकी मन कभी–कभी यह जानने के लिए विवश करता है कि चित्रकला का मानव सभ्यता के विकास में क्या योगदान रहा है और किस प्रकार से चित्रकला ने विकास की कडियों को एक–दूसरे के साथ जोडकर आधुनिक समाज को स्थापित करने में अपना योगदान दिया है। यह देखा गया है कि पृथ्वी के समस्त जन्तुओं में प्रारम्भ से लेकर आज तक व्यवहार में एकरुपता रही है। उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। यदि मनुष्य को एक जन्तु के रुप में स्वीकार किया जाये तो उसकी जीवन–शैली में एक क्रमिक परिवर्तन और विकास का अनुभव होता है। यदि हम आदिम मनुष्यों की जीवन–शैली पर दृष्टिपात करें तो विभिन्न काल–खण्डों में रहन–सहन, आचार–विचार एवं सामाजिक संरचना में पर्याप्त परिवर्तन हुआ। आधुनिक वर्गीकरण के दृष्टिकोण से विभिन्न काल–खण्डों को यदि चित्रित किया जाए तो ये क्रमशः निम्नवत् होंगे –

1 पाषाण काल

2 धातु काल

3 आधुनिक अथवा वर्तमान काल

इन सभी कालों में निर्मित चित्रों का अध्ययन करने पर एक क्रमिक विकास को भली–भाँति देखा जा सकता है। पाषाण काल में मानव अत्यन्त बलिष्ठ होते थे तथा पत्थरों के हथियारों से शिकार करके अपना भोजन ग्रहण करते थे अथवा पेड–पौधों से अपनी क्षुधा शान्त करते थे और जंगलों में कन्दराओं के भीतर रहा करते थे। उनका कोई सुव्यवस्थित निवास स्थान नहीं हुआ करता था। शनैः–शनैः मानव–मस्तिष्क के विकास के साथ ज्ञानवश अथवा दुर्घटनावश पत्थरों के टकराने से अग्नि का प्रादुर्भाव हुआ होगा और यहाँ से एक नए युग का प्रारम्भ हुआ। इस युग में अग्नि की गर्मी से पृथ्वी में पाए जाने वाले अवयवों के पिघलने से धातु बनी जिससे विभिन्न प्रकार के धातु के हथियारों का निर्माण मनुष्य ने किया और शिकार करने में उसे सुविधा हुई। यहीं से सम्भवतः मानव जाति में कच्चे मांस, फल–फूल एवं सब्जियों इत्यादि को पकाकर खाने की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई। इन सभी प्रवृत्तियों का चित्रण पर्वतों एवं गुफाओं में मिलता है (चित्र संख्या–1एवं 2)। सम्भवतः इसी काल में मनुष्य की घुमक्कड प्रवृत्ति के स्थान पर एक जगह पर रहकर जीवन–यापन की प्रवृत्ति ने जन्म लिया और एक सुव्यवस्थित समाज की परिकल्पना मानव–मस्तिष्क में जाग्रत हुई होगी। परिणामस्वरूप मकान एवं दैनिक जीवन के उपयोग की वस्तुओं के भंडारण की आवश्यकता हुई होगी।

लेखन से पूर्व आलेखन ही संस्कृति की मुख्य संवाहक थी। प्रागैतिहासिक मानव के मन रूपी संसार का ज्ञान शिला–चित्रों द्वारा अत्यन्त बारीकी के साथ प्राप्त होता है। इसके माध्यम से मानव के अतीत को सजीव देखा जा सकता है, जो किसी भी अन्य माध्यम द्वारा असम्भव है। उन चित्रों में व्याप्त अप्रतिम कला–चेतना एवं रचना–शक्ति के कारण वे सजीवता और सहजता से अज्ञात काल को किसी चलचित्र की भाँति नेत्रों के समक्ष प्रस्तुत कर देते हैं। तत्कालीन संस्कृति

का उद्घाटन लिपि के अभाव में मात्र कला–कृतियों द्वारा हो पाया है। कला उस भाषाविहीन समाज को जानने का माध्यम बनी और शिला–चित्र ही इसके एकमात्र उपलब्ध साक्ष्य हैं। इनके द्वारा उनकी चैतन्यता, अभिव्यक्तिकरण की शक्ति एवं सौन्दर्य–बोध के प्रमाण उपलब्ध होते हैं।

शिला–चित्रों से मानवीय–चेतना का एक अत्यन्त विस्तृत सन्दर्भ प्राप्त होता है साथ ही विकास के विभिन्न स्तर भी स्पष्ट होते हैं। पाश्चात्य कला–मर्मज्ञ हरबर्ट रीड कला को अभिव्यक्ति के माध्यम और ज्ञान की दृष्टि से दर्शन और विज्ञान से अधिक प्रामाणिक और मूल्यवान मानते हैं। उन्होने धर्म, दर्शन और कला तीनों के उद्भव को प्रागैतिहासिक मानव के आन्तरिक जीवन से सम्बद्ध बताया है।1 आखेट दृश्य व्यक्त करते हैं कि कैसे विषम परिस्थितियों पर अपने मनोबल एवं बुद्धिबल से उसने अधिकार प्राप्त किया। ये चित्र प्रागैतिहासिक मानव के सांस्कृतिक–अभियान के प्रथम साक्ष्य हैं जिनकी प्रामाणिकता सिद्ध हो चुकी है। मानव जाति ने अपने जीवन की सबसे लम्बी अवधि इस काल में व्यतीत की है। उसका जीवन उस समय पूर्णतः अस्थिर था। कन्द–मूल एवं फलों से क्षुधा शान्त न होने पर उसके मन में जंगली पशुओं का शिकार करने का विचार आया रहा होगा। किन्तु उसके पास इस हेतु हथियार नहीं थे। इन कठोरतम परिस्थितियों में पत्थर की अपार उपलब्धता ने उसे उनके उपयोग करने की कल्पना को जन्म दिया होगा। जंगली मनुष्य होने के नाते अतिशय ऊर्जावान एवं भीमकाया के कारण अत्यन्त बलशाली प्रागैतिहासिक मानव के लिये भारयुक्त पत्थरों को शिकार हेतु उपयोग में लाना असाधारण न रहा होगा। सम्भवतः यही परिस्थितियां पाषाणयुग की आधारशिला बनीं। पहले कंद–मूल, फल एवं वनस्पति, फिर कच्चे मांस का भक्षण, फिर कभी पत्थरों की अचानक टकराहट से चिंगारी उत्पन्न होकर अग्नि का और फिर वनस्पति एवं मांस पकाकर खाने का विचार मन में उठा होगा। परिणामस्वरूप अग्नि का आविष्कार अस्तित्व में आया होगा।

धीरे–धीरे एकाकीपन से ऊबकर पहले परिवार, फिर समाज–रूप में रहना प्रारम्भ कर दिया होगा। घुमक्कड़ प्रवृत्ति धीरे–धीरे स्थिर निवास, परिवार, गृहस्थ, पूजन–पाठन तथा वंश–परम्परा की प्रवृत्ति में परिवर्तित हुई होगी जैसा कि (चित्र संख्या–1अ, 1ब) से अभिव्यक्त होता है। पत्थरों के पहले साधारण फिर अपेक्षाकृत तीक्ष्ण तथा सुडौल हथियारों एवं औजारों का निर्माण करने का विचार मन में आया होगा (चित्र सं0–2अ, 2ब)। सुरक्षा की दृष्टि से एवं विपरीत

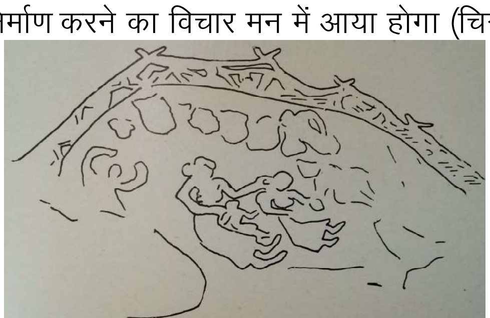

चित्र सं0–1अ

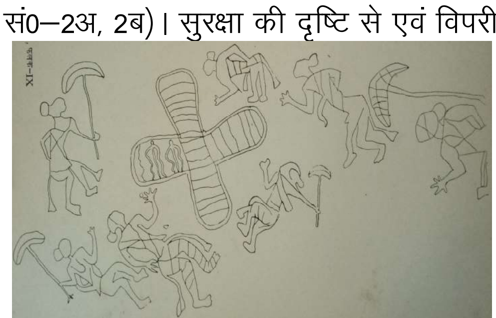

चित्र सं0–1ब

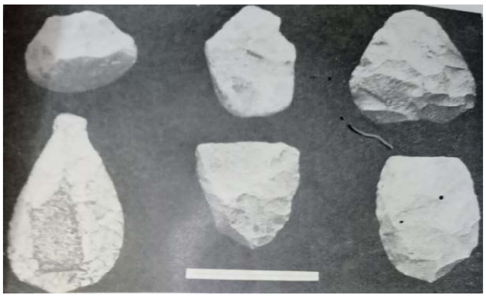

चित्र सं0–2अ

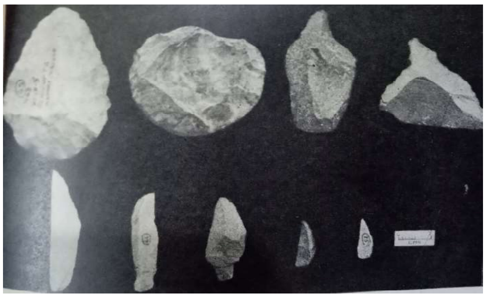

चित्र सं0–2ब

परिस्थितियों जैसे ठंडक इत्यादि से बचने के लिये जानवरों की खाल का उपयोग पत्तों के वस्त्रों के स्थान पर करना आरम्भ किया होगा। समाजीकरण के संकेत भी शिला चित्रों द्वारा मिलते हैं (चित्र संख्या–1एवं 2)। अग्नि, आवश्यक हथियार और औजार, मृद्भाण्ड, कृषि, पशुपालन, वस्त्र, मकान तथा दैनिक जीवन सम्बन्धी अन्य आवश्यक वस्तुयें अस्तित्व में आने लगी थीं। सहचरण, सहनर्तन, प्रसाधन, शिशुपालन, पशुपालन, भोजछाजन तथा जलसंचयन सम्बन्धी चित्र अंकित मिलते हैं। स्त्री–पुरुष के सहनर्तन का अंकन पारिवारिक जीवन का अंग माना जा सकता है।2

पुरातत्व खोजों में तत्पश्चात सिंधु–सभ्यता के अवशेषों ने विश्व–सभ्यता एवं चित्रकला के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा। इस सभ्यता के आश्चर्यजनक रूप से विकास का ज्ञान विलुप्त हो चुके प्राचीन नगरों हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो के प्राप्त अवशेषों द्वारा होता है। इस सभ्यता का रहस्य भी चित्रकला, वास्तुकला, मूर्तिकला एवं अन्य कलाओं द्वारा प्राप्त होता है। ज्यामितीय आलेखन हों या सूक्ष्म अथवा प्राकृतिक आलेखन, वृक्षों, वनस्पतियों, चौपड़ जेसे खेल हों या पशु–पक्षी सभी को तीक्ष्ण सौन्दर्यात्मक दृष्टि का परिचय देते हुए यथा–स्थान अंकित किये जाने के पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध हैं। दैनिक जीवन की आवश्यकताओं से सम्बन्धित वस्तुयें, उपयोग में लाये जाने वाले विभिन्न आकार एवं प्रकार के पात्र, उन पर सौन्दर्य प्रदान किये जाने की दृष्टि से की गयी उत्कृष्ट चित्रकारी, मात्र चार इंच लम्बी धातु में ढली नर्तकी की अत्यन्त सुडौल मूर्ति, बैल के सींगों वाली आकृति जिसके आस–पास विभिन्न जानवर तथा सिर के ऊपर अंकित लिपि, एक अति सुन्दर बलिष्ठ बैल की आकृति (क्रमशः चित्र सं0 3अ,3ब,3स,3द), दुपहिये वाली कांस्य की बैलगाड़ियाँ एवं वस्त्रों से आवृत आकर्षक केश–सज्जा से युक्त मानवाकृतियां चित्रित मिली हैं। कहने का आशय यह है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को चित्रकला ने अपने माध्यम से प्रस्तुत किया है। चित्रकला की उत्कृष्टता इस युग एवं सभ्यता के उत्कृष्ट एवं उन्नत विकास का प्रमाण प्रस्तुत करती है।

चित्र सं0—3अ

चित्र सं0—3ब

चित्र सं0—3स

चित्र सं0—3द

शनैः—शनैः ईसवीं शती प्रारम्भ होने के 500—600 वर्ष पूर्व से चित्रकला का व्यवस्थित रूप में इतिहास उपलब्ध होने लगता है। प्राचीन शास्त्रीय ग्रन्थों में नग्नजित द्वारा रचित ग्रन्थ चित्रलक्षण संस्कृत भाषा में है जिसमें चित्रों के सन्दर्भ में विस्तार से विवेचन किया गया है।3 इस समय मानव—जीवन में धर्म का प्रवेश ब्राह्मण धर्म के रूप में हुआ। तब भी विभिन्न कर्मकाण्डों, रीति—रिवाजों, धर्म—संस्कारों एवं परम्पराओं को चित्रों में स्थान प्राप्त हुआ। इसी के साथ—साथ बौद्ध धर्म का भी प्रादुर्भाव होने के कारण धर्म—सम्बन्धी शिक्षा, उपदेश, भगवान बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित प्रमुख घटनाओं, जातक—कथाओं के चित्रण के साथ—साथ चैत्य, स्तूप एवं विहारों के निर्माण का प्रारम्भ हुआ। उनकी भित्तियों की साज—सज्जा हेतु विभिन्न प्रकार के विविध पशुपक्षियों एवं मानवाकृतियों से युक्त प्रवाहमय लयात्मकता लिये आलेखनों को अपूर्व कुशलता से चित्रों के रुप में उतारा गया। (चित्र संख्या—4अ, 4ब, 4स)

चित्र सं0—4अ

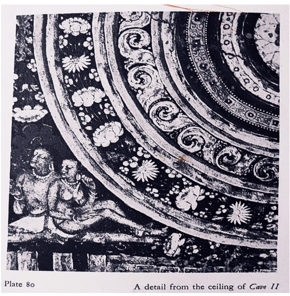

चित्र सं0—4ब

चित्र सं0—4स

इसके अतिरिक्त सामाजिक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करते, व्यक्तिगत दाम्पत्य जीवन को प्रदर्शित करने के साथ ही गीत—संगीत की मंडलियों के अनगिनत चित्रों का सृजन4 भित्ति चित्रों के रूप में हुआ है। प्राचीन भित्ति चित्रों की तुलना में इन भित्ति चित्रों का स्तर उत्तरोत्तर परिष्कृत होता चला आया है। जो मानवाकृतियां पूर्व में ज्यामितीय आकारों में अंकित होती थीं, बौद्ध युग आते—आते मांसलता लिये त्रिआयामी प्रभाव में जीवन्त रूप में निर्मित होने लगीं, जो मानवता के निरन्तर एवं क्रमिक विकास की परिचायक हैं (चित्र संख्या 5)।

चित्र संख्या–5

मध्यकाल का प्रथम चरण समाप्त होते–होते चित्रकला ने भित्ति जैसे विशाल धरातल से उतर कर पोथी पुस्तक चित्रों में स्थान पाया। इनके उदाहरण अपभ्रंश एवं पाल शैली में अतिशय संख्या में निर्मित चित्रों में स्पष्ट देखे जा सकते हैं (चित्र संख्या–6)। चटख रंगों के प्रयोग के साथ ताड़पत्र पर बनी चित्राकृतियां अत्यन्त मोहकता लिये हुये अद्भुत परम्परा का परिचय कराती हैं। इस समय के चित्रों मे लिपि को भी महत्वपूर्ण स्थान मिला है (चित्र संख्या–7)। 13वीं शताब्दी का अन्त आते–आते ताड़पत्र के साथ कागज एवं कपड़े को भी चित्रण के लिये प्रयोग किया जाने लगा। यह विराट परिवर्तन चित्रकला के विकास को उजागर करने के साथ–साथ मानव–सभ्यता के विकास को भी जीवन्त करता है। इस समय प्रचुर मात्रा में धर्म–शिल्प सम्बन्धी महत्वपूर्ण ग्रन्थों–समरांगण सूत्रधार, कल्पसूत्र, शुक्रनीतिसार, त्रिषष्ठि–शलाका पुरूष चरित, नैषधीय चरितम्, गीत गोविन्द इत्यादि की रचना हुई। खनिज एवं प्राकृतिक रंगों के साथ–साथ सोने के रंगों का प्रयोग (चित्र संख्या–8) एवं छाया–प्रकाश के प्रमाण चित्रों में उपलब्ध होते हैं।

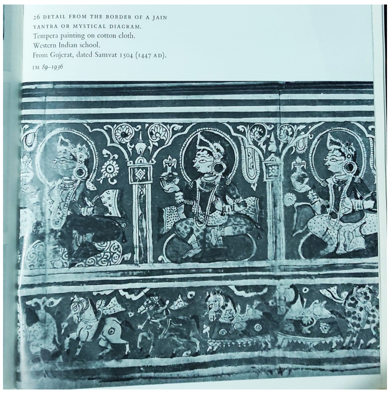

चित्र संख्या–6

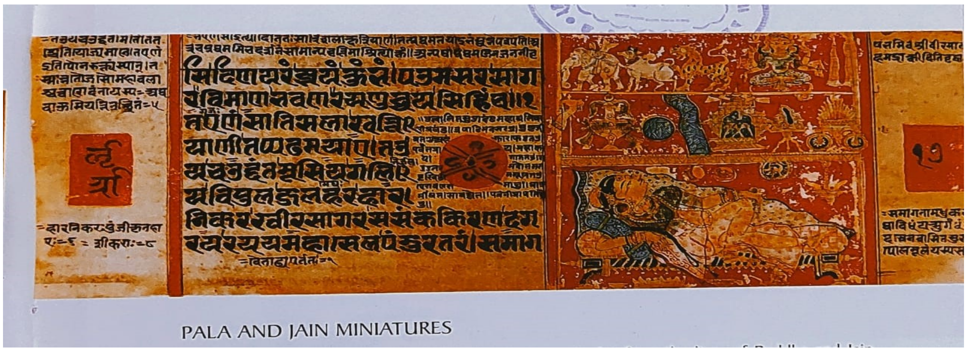

चित्र संख्या–7

चित्र संख्या–8

इस प्रकार मध्ययुग में कलाओं में एक समृद्ध उत्कृष्टता देखने को मिलती है। इसके कारण सौन्दर्यात्मक मूल्यों का निर्माण हुआ। इतिहास का यह काल–खण्ड त्वरित परिवर्तनों का गवाह है जिसमें सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक परिवर्तन एवं उठान साथ–साथ चले हैं। इसी समय मुद्रा के उद्‌भव के माध्यम से गुलामी की बेडियां कमजोर पडने लगीं थीं जिसने नवीन खोजों का मार्ग प्रशस्त किया **5**, और विकास के एक नए दौर की पृष्ठभूमि तैयार हुई।

14वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर देश में अनेकों त्वरित परिवर्तन हुये, जिसमें लम्बे समय तक राजपूत, मुगल एवं पहाड़ी शैली के रूप में चित्रकला पुनः अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँची। इस सम्पूर्ण काल–खण्ड को सांस्कृतिक पुनरूत्थान काल कहा जाता है, जिसमें भक्ति आन्दोलनों, छायावादों एवं औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप चित्रकला को भी अनेकों विविध विषयों द्वारा समृद्ध किया गया। इस समय की सभ्यता एवं संस्कृति के विकास की झांकी आज भी राजघरानों, राजप्रासादों, मन्दिरों, भवनों, ग्रन्थों, समृद्ध जनों के संग्रहों से लेकर देश–विदेशों के संग्रहालयों में सुरक्षित है। साथ ही विविधतापूर्ण, समृद्धिशाली एवं अद्‌भुत संस्कृति की साक्षी भी बनी हुयी है।

आज चित्रकला को किसी भी दृष्टि से देखें चाहे वह तकनीक हो, माध्यम हो, धरातल हो, चित्रण–सामग्री हो अथवा विषय, हर क्षेत्र में अपार कल्पनाशीलता एवं नवीनता की भरमार है जो मनुष्य एवं मानवता, हर प्रकार के विकास की गति को दर्शाती है। हर ओर विविधता एवं नवीनता के ही दर्शन होते हैं (चित्र संख्या–9अ,9ब,9स)।

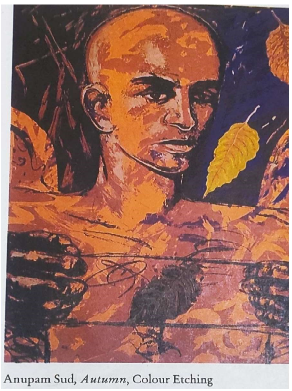

चित्र संख्या–9अ

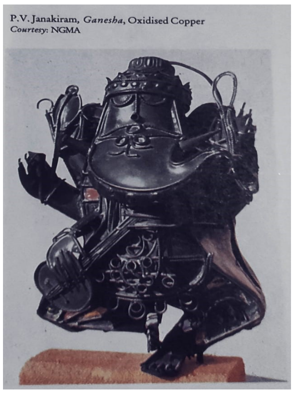

चित्र संख्या–9ब

चित्र संख्या–9स

प्रागैतिहासिक काल के अवशेषों में युग–परिवर्तन के स्पष्ट लक्षण दृष्टव्य हैं। क्रमशः प्रत्येक युग में पूर्व की अपेक्षाकृत उन्नत विकास के लक्षण चित्र रूपी साक्ष्य के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित हैं। कला प्रारम्भ से ही जीवन के समस्त क्रिया–कलापों में समाहित रही है। तत्कालीन वृक्ष–संरक्षण, जल–संरक्षण, ऊर्जा–सरंक्षण जैसे महत्वपूर्ण एवं गम्भीर विषयों के चित्रों से ज्ञात होता है कि खाने–पीने एवं सोने के साथ वातावरण–संरक्षण का ज्ञान उसमें तभी जागृत था। कच्चे मकानों में ऐपन की सजावट से बढकर धीरे–धीरे विशालकाय, सुव्यवस्थित, सुसज्जित आधुनिक युग के आदर्श वायु–संचारयुक्त बीसियों मंजिलों के भवन मानव–सभ्यता के क्रमिक विकास को सिद्ध करते है। इनमें की गई आधुनिक भित्ति चित्रकारी (चित्र संख्या–10), आन्तरिक साज–सज्जा, आदर्श अंग–विन्यास से सज्जित मानवाकृतियों के चित्र, पशु–पक्षियों की सजीव आकृतियां इत्यादि मानव के अद्भुत बौद्धिक विकास की परिचायक हैं। सिलाई, बुनाई, छपाई के उन्नत नमूने, विविधता लिये महीन पच्चीकारी किये आभूषण, बर्तनों पर की गई उत्कृष्ट कारीगरी, वर्ष 2018 में अहमदाबाद में निर्मित सरदार पटेल की 182 मीटर ऊँची विशालकाय जीवन्त मूर्ति (चित्र संख्या–11), अयोध्या में निर्माणाधीन भव्य राम–मन्दिर हेतु उत्कृष्ट नक्काशी की गई अनगिनत मूर्तियाँ एवं स्तम्भ इत्यादि विकसित सभ्यता को प्रस्तुत करते साक्ष्य हैं। इनके द्वारा सम्पूर्ण जन–मानस की कलानुरागिता एवं सर्वांगीण जीवन के निर्माण का ज्ञान होता है।

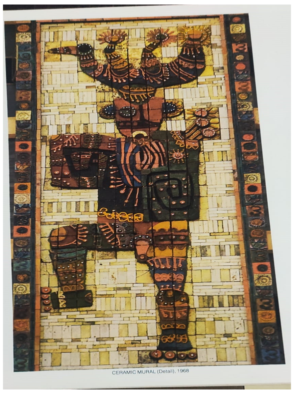

चित्र संख्या–10

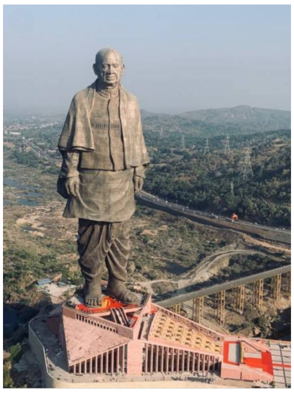

चित्र संख्या–11

निष्कर्ष

आज के अत्यधिक औद्योगिक विकास की पृष्ठभूमि में भी चित्रकला के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। इस संदर्भ में यह कहना सर्वथा उचित है कि निर्माण किसी भी प्रकार का हो चाहे गृह–निर्माण हो, सुव्यवस्थित नगर–विकास का निर्माण हो, विभिन्न नभ, जल और थल के आयुधों का निर्माण हो अथवा ऑटोमोबाइल का निर्माण, सभी प्रकार के निर्माणों का प्रारम्भ रेखाचित्रों द्वारा काल्पनिक निर्माण को साकार रूप प्रदान करके ही किया जाता है। अतः मानव–सभ्यता के विकास के 'अध्ययन' में चित्रकला की भूमिका असन्दिग्ध है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि चित्रकला मानव–सभ्यता के विकास का आईना है और आज के आधुनिक मानव के विकास में चित्रकला का बराबरी का योगदान है और सदैव–सदैव रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. "The three realms of the spiritual life- religion,art and philosophy, have their beginnings in that world of Pre-Historic man." Art and Society, Herbert Read, Pg. 18-19, London: Faber and Faber 1956.
2. प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, डा0 जगदीश गुप्त, पृ0–356, 1973,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. चित्रसूत्रम्, डॉ0 प्रेम शंकर द्विवेदी, डॉ0 बिन्दू दूबे, पृ0–13, 1997, कला प्रकाशन, वाराणसी
4. कला और कलम, डॉ0 गिरिराज किशोर अग्रवाल, पृ0–67, 2006, अशोक प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ
5. Why Mediaval Art is important in modern day life? ArtRadar Journal.com Sep2021

चित्र–सूची

1. अ. प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, डा0 जगदीश गुप्त, 1973, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली

   ब. प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, डा0 जगदीश गुप्त, 1973,नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली

2. 2v - H.D.Sankalia, Pre-Historic Art in India 1978, Vikas Publishing House pvt. Ltd New Delhi

   ब. H.D.Sankalia, Pre-Historic Art in India 1978 Vikas Publishing House pvt. Ltd New Delhi

3. अ. H.D.Sankalia, Pre-Historic Art in India 1978 Vikas Publishing House pvt. Ltd New Delhi

   ब. H.D.Sankalia, Pre-Historic Art in India 1978 Vikas Publishing House pvt. Ltd New Delhi

   स. Veronica Ions, Indian Mythology, 1967, The Hamlyn Publishing Group Limited, England

   द. H.D.Sankalia, Pre-Historic Art in India, 1978 Vikas Publishing House pvt. Ltd New Delhi

4. अ. Veronica Ions, Indian Mythology, 1967 The Hamlyn Publishing Group Limited, England

   ब. Dr. Madanjeet Singh, The Cave Paintings of Ajanta, 1965, Thames and Hudson, London

   स. Dr Madanjeet Singh, The Cave Paintings of Ajanta, 1965, Thames and Hudson, London

5. Veronica Ions, Indian Mythology, 1967 The Hamlyn Publishing Group Limited, England
6. Indian Art, Victoria and Albert Museum, London, 1977
7. Dr Daljeet, Immortal Miniatures, Aravali Books International [P] Ltd, Delhi
8. M. S. Randhawa, Indian Miniature Paintings, 1981, Roli Books International, N.Delhi

9. अ. Pran Nath Mago, The Contemporary Art in India A Perspective, 2000, Director, National Book Trust, India

ब. Pran Nath Mago, The Contemporary Art in India A Perspective, 2000, Director, National Book Trust, India

स. Pran Nath Mago, The Contemporary Art in India A Perspective,2000, Director, National Book Trust, India

10. Satish Gujral, The world of Satish Gujral in his own words, 1993, UBS Publishers and Distributers Ltd. New Delhi.

11. ArchDaily, archdaily.com, delivered by Google.